# घरेलू और कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व गुणों और सुरक्षा की भावना की खोज: एक व्यापक अध्ययन

**अभिलाषा भोजक[1] डॉ. अनिता सिंह[2]**

**[1]शोधार्थी [2]सह–प्राध्यापक**

**विभाग: शिक्षा**

**श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ, राजस्थान**

## सार

घरेलू और कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व और सुरक्षा की भावनाओं का अनुशंसित अध्ययन का उद्देश्य उन महिलाओं के सोच और दृष्टिकोण की गहराईयों में प्रकट व्यक्तित्व और बच्चों की सुरक्षा की प्राथमिकताओं को समझने का है। यह अध्ययन सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक प्रथाओं, और व्यक्तिगत अनुभवों के परिप्रेक्ष्य में बच्चों के व्यक्तिगत विकास को विश्लेषण करने का प्रयास करता है। इस अध्ययन में, घरेलू और कामकाजी महिलाओं के बच्चों की मानसिकता, आत्मसमर्पण, सामाजिक संबंध, और सुरक्षा की भावनाएं पर प्रकार-विकार, समाजिक प्रेरणाएँ और उनके परिवार के दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के परिणाम प्रासंगिक सुझाव देते हैं कि ऐसे मातृत्व संबंधित प्रोग्राम और सामाजिक प्रयासों का समर्थन करने के माध्यम से इन बच्चों की सुरक्षा और सकारात्मक व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

## प्रस्तावना:

घरेलू और कामकाजी महिलाएं समाज की मुख्य धारा होती हैं जो न केवल अपने परिवार के लिए बल्कि समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन महिलाओं के

बच्चों का व्यक्तित्व और सुरक्षा संबंधित मामूली परिपर्णता और सुरक्षा भावनाओं से प्रभावित होते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यही है कि हम इन भावनाओं के अध्ययन के माध्यम से घरेलू और कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व और सुरक्षा के प्रति उनके प्रभाव को समझ सकें।

महिलाओं के घरेलू और कामकाजी परिस्थितियों में उनके बच्चों के व्यक्तित्व और सुरक्षा की भावनाएँ काफी महत्वपूर्ण होती हैं। इस विषय पर अध्ययन करने से हम समझ सकते हैं कि माताएं और उनके बच्चे कैसे इस प्रकार की परिस्थितियों में सहनशीलता और सुरक्षा की भावनाएँ विकसित करते हैं।

**मातृसता और परिपर्णता की भावनाएँ:**

मातृसता और परिपर्णता, दो ऐसी भावनाएँ हैं जो महिलाओं के जीवन में गहरी रूप से प्रवृत्त होती हैं। ये भावनाएँ मातृत्व के प्रति प्रेम और जिम्मेदारियों की ओर इशारा करती हैं, साथ ही समाज में समर्पितता और उत्तरदायित्व की भावनाओं को भी प्रकट करती हैं। इन भावनाओं का महत्वपूर्ण योगदान समाज में सुरक्षित और सहनशील परिवार और समुदाय की निर्माण में होता है।

**मातृसता:**

मातृसता एक गहरा और अद्वितीय भावना है जिसमें माताओं का बच्चों के प्रति प्यार और समर्पण होता है। यह भावना जन्मने से ही महिलाओं में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होती है और उन्हें अपने बच्चों की देखभाल और संरक्षण के लिए प्रोत्साहित करती है। मातृसता बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, भविष्य आदि की देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक और भावनात्मक सहनशीलता का स्रोत भी होता है।

मातृसता माताओं की बच्चों के प्रति सहनशीलता, सख्तियाँ और प्यार की भावनाओं को प्रकट करती है। यह न केवल बच्चों के शारीरिक आवश्यकताओं की देखभाल को शामिल करती है, बल्कि उनके मानसिक और भावनात्मक विकास को भी महत्व देती

है। माता की मातृसता के प्रति प्यार और सहयोग बच्चों को सुरक्षित और स्थिर महसूस करने में मदद करते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और समर्थन बढ़ता है।

**परिपर्णता:**

परिपर्णता एक और महत्वपूर्ण भावना है जो महिलाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह भावना उनकी समाज में उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका को प्रकट करती है और उन्हें परिवार और समुदाय की सेवा के प्रति प्रोत्साहित करती है। परिपर्णता से महिलाएं समाज में सहयोगी, समर्पित और सक्रिय सदस्य के रूप में उत्तरदायित्वपूर्ण योगदान कर सकती हैं।

**शिक्षा का महत्व:**

शिक्षा मानव समाज की प्रगति और विकास की कुंजी होती है। यह व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक विकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और समाज को सशक्त बनाने का माध्यम प्रदान करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति न केवल ज्ञान प्राप्त करता है, बल्कि उसके सोचने की क्षमता, समझदारी और सामाजिक जागरूकता में भी सुधार होता है। इसलिए, शिक्षा का महत्व अत्यधिक है और यहाँ पर हम इसके महत्व के कुछ पहलुओं को विचार करेंगे।

**ज्ञान का स्रोत:**

शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान का स्रोत प्रदान करती है। यह उसे विभिन्न क्षेत्रों में जागरूक बनाती है और समय के साथ उसके नवाचारों और विकास के साथ अद्यतन करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति विज्ञान, साहित्य, कला, तकनीकी और अन्य विषयों में ज्ञान प्राप्त करता है, जो उसके करियर और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

**व्यक्तिगत विकास:**

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में मदद करती है। यह उसकी क्षमताओं, रुचियों और दक्षताओं को पहचानने में मदद करती है और उसे उसके अधिकार्यों में सफलता प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा के माध्यम से

व्यक्ति अपने स्वयं के प्रति आत्म-संवाद और स्थायिता विकसित करता है, जिससे वह सफलता की ओर बढ़ता है।

**समाज में सुधार:**

शिक्षा समाज में सुधार लाने का महत्वपूर्ण माध्यम होती है। शिक्षित व्यक्ति जागरूकता, सामाजिक समस्याओं के प्रति सहयोग और सक्रियता में रुचि रखते हैं। उन्हें उन समस्याओं का समाधान ढूंढने की क्षमता होती है जो समाज को प्रभावित कर रही हैं, जैसे कि जनसंख्या वृद्धि, बालक श्रमिकों का उत्थान, जलवायु परिवर्तन आदि।

**आत्मनिर्भरता:**

शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है। यह उसे नौकरी के लिए नियोक्ताओं की आवश्यकताओं के अनुसार तैयार करती है, या व्यवसाय आरंभ करने के लिए आत्म-प्रेरित करती है।

**सुरक्षा की भावनाएँ:**

घरेलू और कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व में सुरक्षा की भावनाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह भावनाएं उन्हें आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से सुरक्षित महसूस करने में मदद करती हैं।

सुरक्षा, हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो हमें खुद को भायों से बचाने का अवसर प्रदान करता है। यह एक भावना है जो हमें आत्मनिर्भरता, सुरक्षित महसूस करने और अपने आसपास की परिस्थितियों को समझने में मदद करती है। सुरक्षा की भावनाएँ महिलाओं और उनके बच्चों के व्यक्तित्व और दैनिक जीवन को प्रभावित करती हैं। इस अनुशंसित अध्ययन में, हम सुरक्षा की भावनाओं के महत्व को विस्तार से समझेंगे और यह कैसे घरेलू और कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं, इस पर चर्चा करेंगे।

सुरक्षा की भावनाएँ एक व्यक्ति के जीवन के बुनियादी हिस्से हैं। माता-पिता अपने बच्चों को बचपन से ही सुरक्षित महसूस कराने का प्रयास करते हैं। यह सुरक्षा की भावनाएँ ही

होती हैं जो बच्चों को अपने परिवार में समर्थन और सुरक्षा का आभास कराती हैं। बच्चों की यह सुरक्षा की भावनाएँ उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महिलाएं, जो घरेलू और कामकाजी दोनों दशाओं में होती हैं, अपने बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता देती हैं। वे अपने बच्चों के साथ समय बिताने, उनके साथ खेलने और उनकी आवश्यकताओं को समझकर उनकी सुरक्षा का ध्यान रखती हैं। घरेलू माताएं अक्सर अपने बच्चों को अपनी गोद में सुलाती हैं और उन्हें एक आवाज़ का एहसास कराती हैं कि वे सुरक्षित हैं। उनके बच्चों के लिए यह एक प्राकृतिक और सुरक्षित माहौल पैदा करता है जो उनके आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है।

कामकाजी महिलाएं भी अपने बच्चों की सुरक्षा को महत्व देती हैं। यह तो एक बड़ी चुनौती हो सकता है क्योंकि वे अपने पेशेवर कार्यों के बीच अधिक समय नहीं दे पाती हैं, लेकिन उन्होंने समायोजन बनाने और सहायता प्रदान करने के तरीके ढूंढ निकाले हैं। वे अपने बच्चों को समझाती हैं कि सुरक्षा का महत्व और उन्हें बताती हैं कि वे हमेशा उनसे बात कर सकते हैं,

**सामाजिक संरचना का प्रभाव:**

घरेलू और कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व पर सामाजिक संरचना का भी प्रभाव होता है। उनके परिवार की सामाजिक स्थिति, सामाजिक समृद्धि और उनके परिवार के सदस्यों के साथ रिश्तों से उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। समाज मानव संगठन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका व्यक्तियों और समूहों पर गहरा प्रभाव होता है। सामाजिक संरचना मानव संगठन की व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से व्यवस्था होती है जो व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं, आदर्शों और व्यवहारों को निर्मित करती है। सामाजिक संरचना का प्रभाव व्यक्तिगत स्तर से लेकर समाज के विभिन्न पहलुओं तक महत्वपूर्ण है।

**1. व्यक्तिगत स्तर पर प्रभाव:**

सामाजिक संरचना व्यक्तिगत विकास पर सीधा प्रभाव डालती है। एक व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय जैसे कि शिक्षा, कैरियर, संबंध आदि पर सामाजिक प्रेरणा का असर होता है। उच्च जाति, धर्म, जाति या आर्थिक स्थिति आदि सामाजिक पैरामीटरों के आधार पर व्यक्तिगत संबंध और अवसरों में अंतर हो सकता है।

**2. आर्थिक प्रभाव:**

सामाजिक संरचना आर्थिक विकास पर भी बड़ा प्रभाव डालती है। आर्थिक स्थिति समाज में व्यक्तिगत और सामाजिक मान्यता को प्रभावित करती है, जिससे आत्मसमर्पण और आत्म-सम्मान में अंतर हो सकता है। आर्थिक समानता की कमी आर्थिक असमानता को बढ़ा सकती है और यह समाज में विभिन्न समस्याओं की ओर बढ़ने का कारण बन सकती है।

**3. सामाजिक असमानता:**

सामाजिक संरचना में असमानता का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर होने वाली सामाजिक असमानता नेताओं और व्यक्तियों के आर्थिक और सामाजिक प्रतिष्ठान में अंतर डाल सकती है।

**4. शिक्षा और विकास:**

सामाजिक संरचना शिक्षा और विकास पर भी प्रभाव डालती है। सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा के अधिक उपलब्ध होने से लोगों की सोच और दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया है। विकास के साथ शिक्षित और सशक्त नागरिकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है जो समाज के विकास में सहायक होती है।

**संदर्भ**

1. एज़र ए. 2004. अकेले घर: स्कूल और बच्चे के व्यवहार के बाद पर्यवेक्षण। जर्नल ऑफ़ पब्लिक इकोनॉमिक्स 88, 1835 -1848।

2. अल्वारेज़, डब्ल्यू.एफ. 1986। माताओं के लिए मातृ रोजगार का अर्थ और उनके तीन साल के बच्चों के बारे में उनकी धारणाएं, विकासात्मक मनोविज्ञान 56, पीपी 350 - 360।

3. अंद्राबी, जी.ए. 1997. कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों का उनके समायोजन, शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित एम. फिल शोध प्रबंध विश्वविद्यालय। कश्मीर का.

4. ब्रैकेट, एम. ए., मेयर, जे. डी. और वार्नर, आर. एम. 2004. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यवहार की भविष्यवाणी। व्यक्तित्व और व्यक्तिगत अंतर, 36, 1387 - 1402।

5. ब्रोंफेनब्रेनर, यू और हेंडरसन, सी. आर; जे आर. 1985. काम करना और देखना: मातृ रोजगार की स्थिति और माता-पिता की अपने तीन साल के बच्चों के प्रति धारणाएँ। बाल विकास, 55 पृष्ठ 1362-1378।

6. ब्रूक्स-गन, जे; हान डब्ल्यू जे और वाल्डफोगेल, जे 2002. जीवन के पहले तीन वर्षों में मातृ रोजगार और बच्चे के संज्ञानात्मक परिणाम। बाल विकास, 73 पीपी 1052 - 1072।

7. कैपलान जी. और बरहाश ए.जेड. 1998. प्रारंभिक बचपन की भावनात्मक समस्याएं। बेसिक बुक्स, इंक. न्यूयॉर्क 8. ढौंडियाल एम. 2006. आधुनिक युग में भारतीय महिलाएं। कॉमन वेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली। पीपी 56-126

8. एरिकसन, ई. 1980. पहचान और जीवन चक्र (दूसरा संस्करण) न्यूयॉर्क नॉर्टन।

9. हंगल एस.ए.ए. विजयालक्ष्मी। 2007. नौकरीपेशा माताओं और गृहणियों के किशोर बच्चों की आत्म अवधारणा, भावनात्मक परिपक्वता और उपलब्धि प्रेरणा। जर्नल ऑफ़ द इंडियन एकेडमी ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी 33, 103-110 कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़।

10. हिल एंड एसोसिएट्स। 2001. प्रारंभिक और व्यापक मातृ रोजगार, 4-6 वर्ष के बच्चों पर प्रभाव। जर्नल ऑफ मैरिज एंड द फैमिली, 53 पीपी 1083 - 1099।

11. हॉक, ई; मैकब्राइड, एस; और गनेज़्दा, एम. 2004। मातृ अलगाव चिंता: मातृ परिप्रेक्ष्य से माँ-माँ शिशु अलगाव। बाल विकास, 60, 793-802।

12. हॉफमैन एल.डब्ल्यू. 1963. नी एफ. इवान और हॉफमैन एलडब्ल्यू (एड) में "काम करने का निर्णय"। अमेरिका, शिकागो में कार्यरत माँ: रैंड मैकनेली एंड कंपनी।

13. हॉफमैन एल.डब्ल्यू. 1980. स्कूली उम्र के बच्चों के शैक्षणिक दृष्टिकोण और प्रदर्शन पर मातृ रोजगार का प्रभाव। स्कूल मनोविज्ञान समीक्षा, 9, 319-336।

14. हरलॉक ई.बी. 2007. बाल विकास। टाटा मैकग्रा हिल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड नई दिल्ली।

15. महाजन, ए. 1966. महिलाओं की दो भूमिकाएँ: भूमिका संघर्ष का एक अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ़ सोशल वर्क, 24 (4), पीपी 377 - 380।

16. मिलर, एस.एम. 1975। किंडरगार्टन लड़कियों में सेक्स भूमिका धारणा हितों और आत्मसम्मान पर मातृ रोजगार का प्रभाव। विकासात्मक मनोविज्ञान, द्वितीय.

17. मोदी, एस.एन.; और मूर्ति, वी.एन. 1988. कामकाजी माताओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन। जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड क्लिनिकल स्टडीज, 4, 161-164।